

भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्रसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (II)

PART II—Section 3—Sub-section (II)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 150] नई दिल्ली, मंगलवार मार्च 26, 1974/चैत्र 5, 1896

No. 150] NEW DELHI, TUESDAY, MARCH 26, 1974/CHAITRA 5, 1896

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

ORDER

New Delhi, the 26th March 1974

S.O. 213(E).—Whereas by the Order of the Government of India in the late Ministry of International Trade No. S.O. 3548, dated the 17th December, 1963, read with the Orders of the Government of India, in the Ministry of Commerce No. S.O. 4205, dated the 22nd November, 1968, and in the late Ministry of Foreign Trade and Supply Nos. S.O. 741, dated the 20th February, 1969, and S.O. 4433, dated the 30th October, 1969, and in the late Ministry of Foreign Trade No. S.O. 1098, dated the 17th March, 1970, S.O. 1267, dated the 22nd March, 1971, S.O. 248(E), dated the 30th March, 1972, and S.O. 251(E), dated the 1st April, 1972, the management of the whole of the industrial undertaking known as the Bengal Nagpur Cotton Mills Limited, Rainandgaon, had been taken over by the Authorised Controller referred to in the Order first mentioned above for a period upto and including the 30th April, 1974;

And whereas the Central Government is of the opinion that it is expedient in the public interest that the management of the said industrial undertaking by the said Authorised Controller should continue for a further period of one year upto and including the 30th April, 1975;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-section (2) of section 18A of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951, (85 of 1951) the Central Government hereby directs, that the order first mentioned above shall continue to have effect for a further period upto and including the 30th April, 1975.

[No. F.28013/13/74-NTC]

D. K. SAXENA, Jt. Secy.

औद्योगिक विकास मन्त्रालय

आदेश

नई दिल्ली, 26 मार्च, 1974

का० आ० 213 (अ).—यतः भारत सरकार के वाणिज्य मन्त्रालय के आदेश संख्या का० आ० 4205, तारीख 22 नवम्बर, 1968, और भूतपूर्व विदेश व्यापार और पूर्ति मन्त्रालय के आदेश संख्या का० आ० 741, तारीख 20 फरवरी, 1969, और का० आ० 4433, तारीख 30 अक्टूबर, 1969 और भूतपूर्व विदेश व्यापार मन्त्रालय के आदेश सं० का० आ० 1098, तारीख 17 मार्च, 1970, का० आ० 1267, तारीख 22 मार्च 1971, का० आ० 248 (इ), तारीख 30 मार्च, 1972 और का० आ० 251 (इ), तारीख 1 अप्रैल, 1972 के साथ पठित भारत सरकार के भूतपूर्व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मन्त्रालय के आदेश संख्या का० आ० 3548, तारीख 17 दिसम्बर, 1963 द्वारा बंगाल, नागपुर काटन मिल्स लिमिटेड, राजनन्द गांव के नाम से ज्ञान सम्पूर्ण औद्योगिक उपक्रम का प्रबन्ध ऊपर वर्णित आदेश में निर्देशित प्राधिकृत नियंत्रक द्वारा 30 अप्रैल, 1974 तक की जिसमें यह दिन भी शामिल है, अवधि के लिए ग्रहण कर लिया गया था;

और यतः केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि जनता के हित में यह समीचीन है कि उक्त औद्योगिक उपक्रम का प्रबन्ध उक्त प्राधिकृत नियंत्रक द्वारा 30 अप्रैल 1975 तक, जिसमें यह दिन भी सम्मिलित है, एक और वर्ष की अवधि के लिए चालू रहना चाहिए ;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1951 (1951 का 65) की धारा 18 क की उपधारा (2) के परन्तु द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निदेश देती है कि ऊपर अंतिम वर्णित आदेश का प्रभाव 30 अप्रैल, 1975 तक, जिसमें यह दिन भी सम्मिलित है, कि और अवधि तक चालू रहेगा ।

[सं० फ० 28013/13/74-रा० टो० पी०]

डी० के० सक्सेना, संयुक्त सचिव ।